ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)

बुलेटिन संख्या-६७
दिनांक-शुक्रवार,१४ सितम्बर,२०१८

टेलीफोन - ०६२७४-२४०२६६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३२.५ एवं २५.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८८ सुबह में एवं दोपहर में ७४ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.२ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ४.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ७.६ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में २७.८ एवं दोपहर में ३२.६ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में पूसा मौसमीय वेद्यशाला में १.० मि०मी० वर्षा रिकार्ड हुई।

• मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(१५ से १६ सितम्बर, २०१८)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १५ से १६ सितम्बर,२०१८ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमानित अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में अच्छी वर्षा की संभावना नही है, अधिकतर स्थानों पर मौसम के आमतौर पर शुष्क रहने का अनुमान है। अगले २४ घंटों में कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा हो सकती है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३५ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान २५ से २७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से अगले २ दिनों तक पुरवा हवा तथा उसके बाद पछिया पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में करीब ८० से ९० प्रतिशत तथा दोपहर में ६० से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- दुधारु पशुओं में बरसात के अन्त में यकृत कृमि (लिवर फ्लुक) एवं एम्फीस्टोम का संक्रमण खासकर नदी, तालाब या बाढ़ के पानी से संक्रमित चारा खाने से बहुत अधिक होता है। इससे वचाव के लिए ऑक्सीक्लोजानाईड एवं लिबामिजोल १०० मि०ली० खाली पेट पशुओं को अवश्य पिलायें।
- पूर्वानुमानित अवधि में वर्षा की कम संभावना को देखते हुए धान की फसल में जीवन रक्षक सिंचाई करें। खेतों से खर-पतवार निकाल कर सिचांई करना उचित होगा।
- बरसात के दिनों में परती खेतो एवं खेतो के मेड़ पर अत्यधिक दुब, मोथा, घास वाली जंगल उग आते है, जिसमें कीट-व्याधि अपना निवास स्थान बनाकर अपने अण्डे को सुरक्षित रखते है। अण्डे से पिल्लू बनते ही ये आस-पास के फसलों में घुस जाते हैं एवं पौधे की शाखाओं को खाकर अत्यधिक नुकसान पहुँचाते हैं। अतः इन जंगलों को नष्ट करने के लिए खरपतवारनाशी दवा ग्लाइफोसेट ४१ % एस०एल० का १०-१५ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर कड़ी धूप के वक्त छिड़काव करें। अच्छे परिणाम के लिए साफ पानी का प्रयोग करें। छिड़काव के बाद छिड़काव वाले यंत्र की सफाई अवश्य कर लें। इस दवा को किसी भी खड़ी फसल में छिड़काव कदापि नहीं करे।
- मिर्च, बैगन, टमाटर वाली सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें। ये कीट विषाणु जनित रोग के लिए वाहक का काम करते है जिससे पौध के पत्ते टेढ़े-मेढ़े होकर सिकुड़कर रोगग्रस्त हो जाते है। यह बड़ी तेजी से एक-पौधें से दुसरे पौधे में फैलता है। इससे बचाव के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड दवा का ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। वर्त्तमान नमीयुक्त गर्म मौसम इस कीट के प्रकोप के लिए अनुकुल है। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा-मेढ़ा, कभी-कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर १ किलोंग्राम छोआ एवं २ लीटर मैलाथियान ५० ई०सी० तरल दवा को ८०० से १००० लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव करे।
- ब्राउन प्लांट होपर कीट धान की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी-कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड @ ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- धान की फसल में पत्ती का जीवाणु झुलसा रोग का नियंत्रण करें। इस रोग में पत्ती की चोटी की तरफ से किनारों या मध्य शिरा से होकर नीचे की तरफ धब्बा बढ़ता है। जिसका रंग पुआल जैसा हो जाता है। बाद में पुरा पौधा सुख जाता है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव हेतु स्ट्रेप्टोसाइक्लिन ५० ग्राम एवं कॉपर आक्सीक्लोराईड २.५ किलोग्राम दवा को ८०० लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से १२ दिनों के अन्तराल में दो छिड़काव करें।
- भिंडी, उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस रोग की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की शिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियाँ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोगग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३२.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.६ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २४.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.२ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी